20.5° अधिकतम तापमान | 15.6° न्यूनतम तापमान

दैनिक जागरण
पानीपत, 8 फरवरी 2019

हरियाणा जागरण

धरती दे रही संभलने की चेतावनी वरना आने वाला वक्त पड़ेगा भारी

करनाल में अंतरराष्ट्रीय लवणता कॉन्फ्रेंस | विज्ञानियों ने जताई चिंता | धरती हो रही तनाव का शिकार

मनोज ठाकुर ● करनाल

तनाव से हम ही परेशान नहीं है। तनाव का शिकार हमारी धरती भी हो रही है। असर इतना है कि उत्पादकता तेजी से कम हो रही है। हम हैं कि जमीन को तनाव मुक्त करने के तरीकों पर काम ही नहीं कर रहे हैं। इससे डिप्रेशन का स्तर तेजी से बढ़ रहा है। अब भी यदि जमीन की मनोस्थिति पर ध्यान नहीं दिया तो आने वाला वक्त कृषि क्षेत्र के लिए खास चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसलिए अब भी वक्त है। हमें संभल जाना चाहिए। बृहस्पतिवार को केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान की स्वर्ण जयंती पर अंतरराष्ट्रीय लवणता कॉन्फ्रेंस में आए हुए वैज्ञानिकों ने इस पर चिंता जाहिर की। इसके साथ ही ऐसे उपाय करने पर जोर दिया जिससे जमीन की स्थिति में सुधार हो। तीन दिवसीय कांफ्रेंस का आयोजन भारतीय केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान तथा भारतीय मृदा लवणता एवं जलगुणवत्ता सोसाइटी कर रही है।

वैज्ञानिकों ने बताया कि जमीन की अपनी तासीर होती है। जब यह कम होना शुरू होती है तो जाहिर है इसका असर होता है। इस असर को ही वैज्ञानिक भाषा में जमीन का तनाव बोलते हैं। इसमें बंजर जमीन, ऐसी जमीन जिसमें पानी जमा रहता है, या फिर वह जमीन जिसकी उत्पादक क्षमता कम है। तनावग्रस्त जमीन की श्रेणी में आती है।

तो क्यों जमीन डिप्रेशन में आ रही है : अफ्रीकन एशियन ग्रामीण विकास संगठन (आरड्) के महासचिव इंजीनियर वास्फी हसन एल श्रीलीन ने बताया कि शुद्ध जल की कमी इसकी सबसे बड़ी वजह है। जिससे जमीन पर सबसे ज्यादा प्रतिकूल असर पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि हमें जमीन में नमक की मात्रा बढ़ने से रोकनी होगी। भूजल को प्रदूषण से बचाना होगा। इसके लिए कृषि वैज्ञानिकों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास करने होंगे। अंतरराष्ट्रीय कृषि विज्ञान अनुसंधान केंद्र (जिरकास) जापान के अध्यक्ष डा. मासास इवांगा ने बताया कि जमीन में नमक की मात्रा बढ़ाना बड़ा खतरा है।

सीएसएसआरआइ में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में जिरकास और भारत के बीच साइन हुए एमओयू को दिखाते आइसीएआर के एडीजी एसके चौधरी व जिरकास के प्रेजीडेंट मासास इवांगा।

नमक मापने के लिए मैप तैयार करना चाहिए

अंतरराष्ट्रीय जैव लवणता कृषि केंद्र, दुबई के महानिदेशक, डा. इस्महाने एलोफी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसा मानचित्र तैयार किया जाना चाहिए, जो हमें यह बताए कि कहां कहां कि जमीन में नमक की मात्रा क्या है? इससे फायदा यह होगा कि नीति बनाने के साथ साथ इसे रोकने की दिशा में काम आसान हो जाएगा।

तनामुक्त होगी धरती तो होगा फायदा

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक डा. एसके चौधरी ने बताया कि यदि जमीन तनावमुक्त होगी तो किसानों की आमदनी 1.8 गुणा बढ़ सकती है। इससे हमें भी अच्छी क्वालिटी का अनाज मिलेगा। वैज्ञानिक तो जमीन को ताकतवर बनाने के लिए काम कर रहे हैं। हम सब को मिल कर भी इस दिशा में काम करना होगा। इसके लिए हम यह कर सकते हैं कि प्रदूषण कम से कम हो। घर हो या बाहर हर जगह वेस्ट से कंपोस्ट खाद बनाए।

Sir, Conference News in English Papers will publish tomorrow as more advertisements published today's papers.
हिन्दी न्यूजपेपर की मिडिया कवरेज प्रस्तुत है।

अनिल शर्मा

8/2/19